07 / 12 / 78 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सारे कल्प में समीप सम्बन्ध में आने वाली आत्मा होने का अनुभव

➢➢ अपने अनादि और आदि स्वरूप में स्थित होना

➳ _ ➳ रात्रि में नभ तले बैठ सितारों को मैं आत्मा निहारती हूं

→ हर एक सितारे की चमक अलग अलग है...

→ कोई कैसा, कोई कैसा...

→ मैं आत्मा भी अपने अनादि स्वरूप में एक चमकता सितारा हूं...

→ ये मेरा अविनाशी स्वरूप है...

→ मेरा निराकारी स्वरूप...

→ बिल्कुल अपने ईश्वर पिता के समान रूप है मेरा...

■ मैं आज दिन तक केवल इस शरीर को ही अपना जानती थी...

■ अपने असली स्वरूप को मैने अब जाना है...

■ मेरा अनादि स्वरूप है यह...

➳ _ ➳ फिर धीरे धीरे अपने आकारी स्वरूप में स्थित हो जाती हूं

→ एकदम हल्का अनुभव करती हूं स्वयं को...

→ अपने लाइट के स्वरूप में हूं...

→ वापिस आती हूं अपने साकारी रूप मे...

→ ये मेरा आदि पिता के समान रूप है...

→ तीनों ही अलग अलग, पर हैं सब पिता के समान...

■ निराकारी, साकारी, आकारी ये मेरे ही स्वरूप हैं...

➢➢ अपने असली स्वरूप को जान कल्प पहले की स्मृति का जाग्रत होना

➳ _ ➳ बापदादा के चित्र को निहारते पाती हूँ दोनों को अंग संग

→ मुझे भी बापदादा के साथ साथ रहना है...

→ अभी की समीपता ही सारे कल्प की समीपता का आधार है...

■ इस समीपता को पाने के लिये मुझ आत्मा को श्रेष्ठता धारण करनी होगी...

➳ _ ➳ अपने आकारी स्वरूप में स्थित हो जांच रही हूं अपने क्रिया कलापों को

→ मेरे जीवन में पवित्रता कहाँ तक है...

→ तन, मन, विचारों में कोई अशुद्धि तो नहीं है...

→ किसी भी प्रकार की पवित्रता का खण्डन तो नहीं किया या कर रही हूं...

→ कहीं कोई अस्वच्छता तो नहीं...

→ दृष्टि वर्ति और कृति में कोई चंचलता तो नहीं...

■ मुझे अपना ब्राह्मण जीवन बेदाग रखना है...

■ यही स्वच्छता, सम्पूर्णता ही आधार है सारे कल्प पिता के साथ रहने का...

➢➢ मैं सम्पूर्ण स्वच्छ आत्मा हूं

➳ _ ➳ इस बात को समझ मेरी दृष्टि वृति की चंचलता समाप्त हो रही है

→ मैं स्वच्छता धारण करती जा रही हूं...

→ मेरी पवित्रता अखंड है...

→ मेरा रजिस्टर एकदम साफ़ है...

→ कहीं कोई दाग धब्बा नहीं है...

■ अब में जिज्ञासु नहीं अधिकारी आत्मा हूं...

➳ _ ➳ सदा सफलता स्वरूप आत्मा हूं

→ स्वयं बापदादा मेरे साथी हैं...

→ ये साथी पन ही मेरी सफलता का आधार है...

→ अब पुरषार्थ में कोई मुश्किल अनुभव नहीं होती...

→ मेरा सम्बन्ध सदाकाल के लिए उनके साथ जुड़ गया है...

■ मेरे जीवन का साथी अविनाशी है...

■ यह जन्म जन्म का साथ है...

■ वो मेरे लिए कहीं भी कभी भी सेकंड में पहुंच सकते हैं...

➳ _ ➳ मैं प्राप्ति स्वरूप आत्मा हूं

➳ _ ➳ इन प्राप्तियों से मेरे नयनों में रूहानियत भर गई है

→ मैं शक्ति स्वरूप आत्मा हूं...

→ इस रुहाब से मेरा चेहरा चमकने लगा है...

→ मैं बापदादा का शोकेस में रखा बेहद सुंदर शोपीस हूं...

→ मैं सुख के सागर में समाई हुई हूं...

→ मेरी यह खुशी यह चमक अन्य आत्माओं को भी मेरी ओर आकर्षित कर रही है...

■ सर्व ओर की आत्मायें मेरी तरफ खिंचीं चली आ रही हैं...

■ मैं स्व प्रति, ब्राह्मण परिवार के प्रति, विश्व के प्रति उपकारी हूं...

■ अर्थात स्व उपकारी हूं...

■ अब मैं आत्मा अन्य आत्माओं को भी बाबाबा द्वारा दी हुई गुण शक्तियां देकर बाप समान बनाने में लग गई हूं...